International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 4, Issue 10 Oct. 2022, pp: 972-977 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

पाकुड़ जिले की भौतिक, सांस्कृतिक एवं भौक्षिक विशेशता

MkW0 मनोहर कुमार शोधकर्ता शिक्षा शिभाग बी आर ए बिहार
बिश्वबिद्यतलय मुजफ्फरपुर बिहार

पाकुड़, झारखण्ड राज्य का एक जिला है। इसका मुख्यालय पाकुड़ है। जिले का पश्चिमी भाग पहाड़ी है। इसका कुछ भाग कृशि योग्य एवम् अधिकांश भाग चट्टानी तथा उनुपजाऊ है। पाकुड़ काले पत्थर के चिप्स के लिए प्रसिद्ध है। जिले में धान की पिटाई , बास की टोकरी बनाना, चावल मिलिंग, पोल्ट्री खेती, सूअर, पशुपालन और मत्स्य पालन आदि आर्थिक गतिविधियों का संचालन किया जाता है। संथाल जनसंख्या का सबसे बड़ा हिस्सा है, हालांकि वे जिले में समान रूप से फैले नही है। जिले की एक और महत्वपूर्ण जनजाति पहाड़ी है। यह जिला संथाल परगना के अंतर्गत आता है। 28 जनवरी 1994 को इसे साहिबगंज जिले से अलग करके स्वतंत्र जिला बनाया गया । जिले की अर्थव्यवस्था कृशि, तन, पशुपालन, खनिज और उद्योग पर आधारित है। यह पाकुड़, हिरणपुर, लिट्टीपाड़ा, अमड़ापाड़ा, महेशपुर और पाकुड़िया नामक छः प्रखंडो में बंटा है। जिले की कुल जनसंख्या लगभग 9 लाख है

अध्ययन क्षेत्र,

पाकुड़, झारखण्ड के उत्तर पूर्वी भाग में स्थित है। यह पहले संथाल परगना जिले का हिस्सा था और जब साहिबगंज जिला बना, तो यह इसके उप–विभाजनों में से एक था। यह जिला 240 49′45 ′′N से 24014 ′00′′ N अक्षांश और 87024′00′′ E देशांतरों के बीच स्थित है। पाकुड़ झारखण्ड राज्य में पाकुड़ जिले का जिला मुख्यालय है। यह पाकुड़ जिले के उत्तर पूर्वी भाग के साथ– साथ झारखंड राज्य में स्थित है।

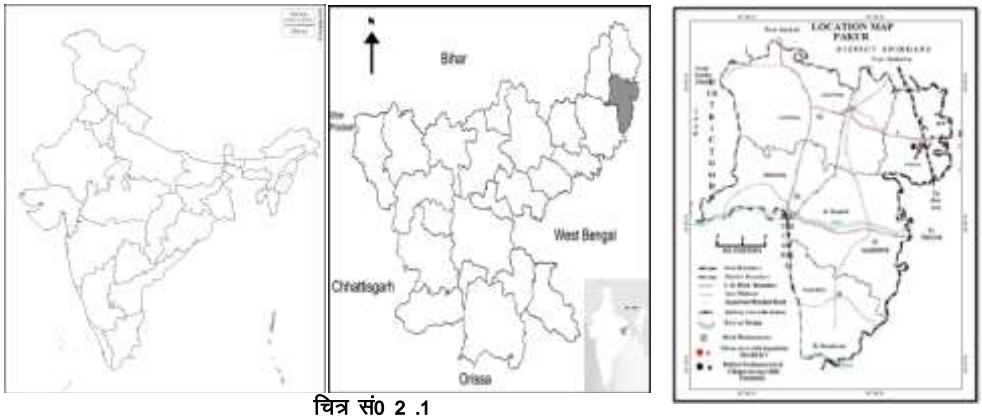

चित्र सं0 2 .1

उच्चावच एवं स्थलकृति

सामान्य तौर पर, छोटानागपुर और संथाल परगना के पठारी क्षेत्र को उप क्षेत्र IV में आर्द्र और उप आर्द्र उश्णकटिबंधीय मानसून की विशेशता हैः उप–क्षेत्र V में उप–उश्णकटिबंधीय से उप–नम और उप–क्षेत्र VI उप–उश्णकटिबंधीय स`नम, पठार, पहाड़ियों और पहाड़ों, बारहमासी नदियों के गैर–अस्तित्व, भुरू में उच्च वन आवरण।

प्रखण्ड	जनसंख्या	क्षेत्रफल
पाकुड	3,27,915	225.04
महे ापुर,	2,08,862	444.61
पाकुड़िया	1,08,576	284.43
लिट्टीपाड़ा	1,05,701	414.19
हिरणपुर	84,079	173.77

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 4, Issue 10 Oct. 2022, pp: 972-977 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

अमड़ापाड़ा	65,289	268.96

पाकुड़ जिले की क्षेत्रफल

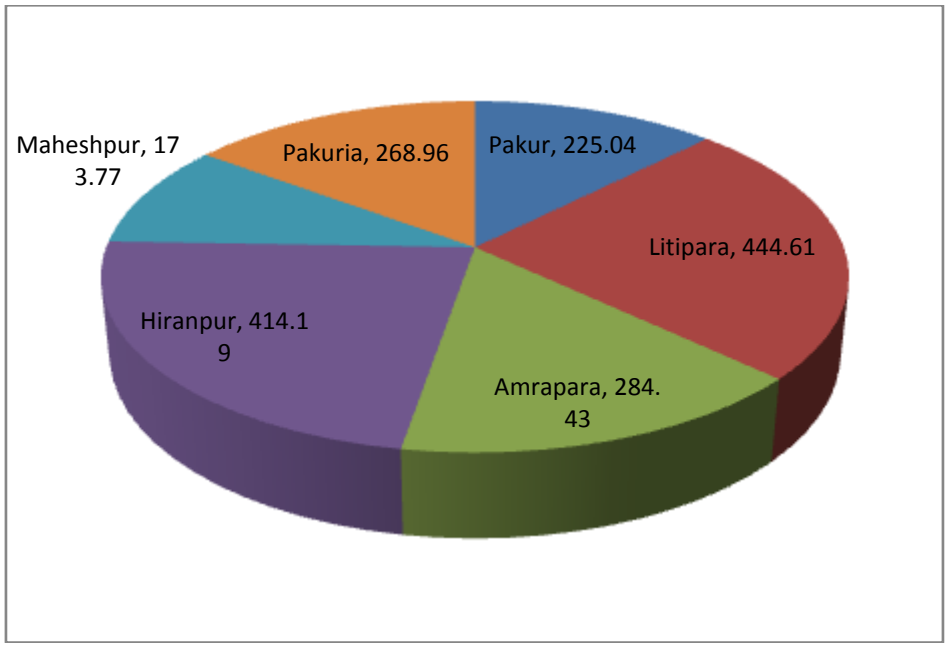

संरचना (भूविज्ञान)

जिले में ज्यादातर राजमहल ट्रेप के बेसाल्टिक प्रवाह द्वारा कवर की गई स्थलाकृति की विशेशता है, जो जिले में प्रमुख रॉक प्रकार है। जिले के अन्य भूवैज्ञानिक सरंचनाएँ लेटराइट , जलेढ़ और गोडवाना है। जिले के पूर्वी भाग में, हाल ही में जलोढ़क पैच में भाामिल है जो मुख्य रूप से रेत और उप–मिट्टी से बने होते है। पहाड़ियों और पठार की सामान्य ऊँचाई एमएसएल के ऊपर 70 से 371 मीटर त ही जलवायु है।

हालांकि, पाकुड़ की जलवायु स्थिति नम गर्मी की विशेशताओं के साथ पश्चिम बंगाल की तरह है। पाकुड़ मासिक वर्शा में अत्यधिक मौसमी भिन्नता का अनुभव करता है।

जलवायु

पाकुड़ में वर्श के लिए 3184.3 मिमी वर्शा होती है। सबसे अधिक माह वाला जिला आर्द्र से उप – आर्द्र जलवायु की विशेशता है। इस जलवायु के लिए कोपेन जलवायु वर्गीकरण उपप्रकार "cfa" है। हामिद उपोश्णकटिबंधीय जलवायु। जिले के प्रमुख हिस्से की जलवायु में गर्म भाुश्क गर्मी, अच्छी बरसात और ठंडी सर्दी होती है।

सर्दियों का मौसम नवंबर से फरवरी तक होता है, मार्च से मई तक गर्मी और जून से सितंबर तक मानसून/बारिश होती है। अक्टुबर मानसुन से सर्दियों तक संक्रमण महीना है। जिले में 1500 मिमी की वार्शिक वर्शा होती है। और वर्शा ऋतु के दौरान अधिकांश वर्शा होती है। पाकुड़ में वर्श का औसत तापमान 25.6 डिग्री है। सबसे गर्म माह मई है, औसत 31.20c का औसत तापमान के साथ । 337.8 मिमी औसत के साथ सबसे तेजी अगस्त में होता है। 2.5 मिमी औसत के साथ सबसे तेजी दिसंबर में होता है।

वर्शा

पाकुड़ मे वर्श के लिए 1384.3 मिमी वर्शा होती है। सबसे अधिक माह वाला जिला उप–आर्द जलवायु की विशेशता है। इस जलवायु के लिए कोपेन जलवायु वर्गीकरण उपप्रकार "cfa" है। हामिद उपोश्णकटिबंधीय जलवायु। जिले के प्रमुख हिस्से की जलवायु में गर्म भाुश्क गर्मी, अच्छी बरसात और ठंडी सर्दी होती है।

इस जिले मे तीन मुख्य नदियाँ है, जैसे बंसलोई, तोराई और ब्राहाणी, बंसलोई और तोराई नदियाँ मध्य में बहती है और ब्राहाणी जिले के दक्षिणी भाग में बहती है। प्राकृतिक जल निकासी के कारण, इस क्षेत्र में बाढ़ संभव नही है। हालांकि, पूर्वी रेलवे की गंगा फीडर नहर और लूप लाइन के बीच स्थित जिले का एक बड़ा हिस्सा जलभराव के लिए उत्तरदायी है, जब अचानक बारिश से नदियों और इसकी सहायक भााखाओं में बाढ़ आ जाती है। यद्यपि जल भराव के रूप में स्थानीयकृत बाढ़ वार्शिक विशेशताएं है लेकिन वे मिट्टी को उपजाऊ बनाते है।

6 प्रखण्डवार क्षेत्रफल

क्र0 स0	प्रखण्ड	क्षेत्रफल (sq.km)
1	अमड़ापाड़ा,	221.71
2	हिरणपुर	169.60
3	लिट्टीपाड़ा	413.05
4	महे ापुर	273.29

5	पाकुड़	448.93
6	पाकुड़िया	279.93
7	कुल क्षेत्रफल	1805.59

स्रोत : पाकुड़ सांख्यिकी हैंडबुक 2018

चित्र सं0 2 .21

आर्थिक परिप्रेक्ष्य

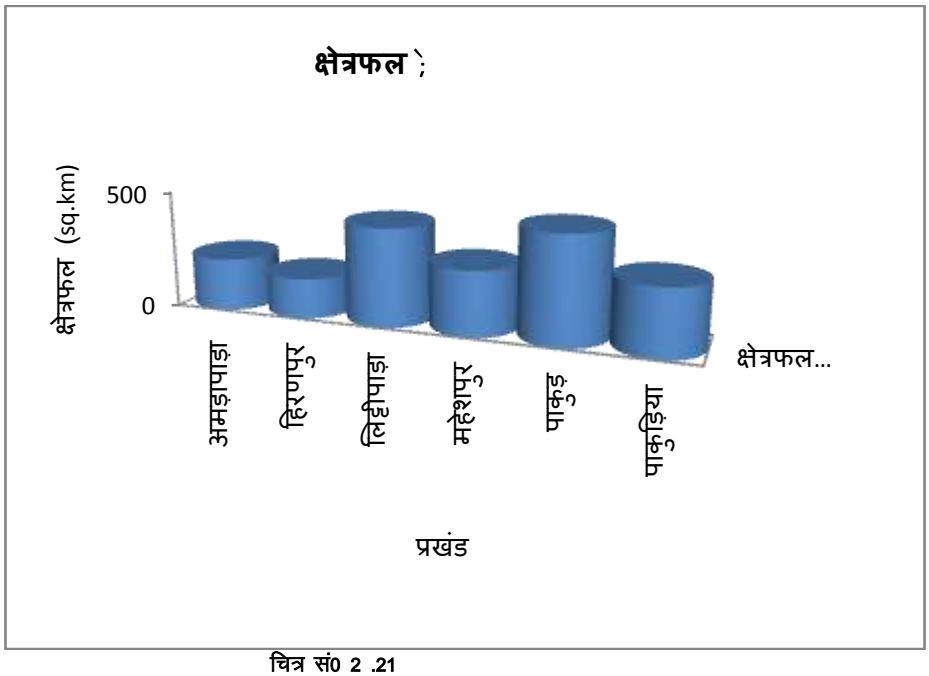

पाकुड़ जिला जनजातियाँ पहाड़ियों और संथालों की भूमि थी। संथाल आबादी का सबसे बड़ा वर्ग है, हालांकि वे जिले में समान रूप समान रूप से नही फैले है। उनकी सबसे बड़ एकाग्रता दामिन –ए–कोह है। जहा वे लगभग दो तिहाई आबादी बनाते है । संथालो के अलावा, पहाड़ी की चोटी पर इस जिले में रहने वाले एक और महत्वपूर्ण जनजाति पहाड़िया है। वे संभवतः क्षेत्र के सबसे पुराने निवासी है। अपनी प्राचीन सभ्यता और संस्कृति के कारण इस जिले की आदिम जनजाति के बारे में जाना जाता है।

इसने संथालों को स्थायी गांवो में बसने के लिए भी मजबूर किया था, हालांकि उनके गांव भौगोलिक रूप से अन्य समुदायों के लोगो से अलग थे। ऐतिहासिक रूप से, पहाड़िया राजमहल पहाड़ियों के मूल निवासी रहे है। संथाल मंगोलियाई स्टॉक से आते है और मुख्य रूप से अंगेजो द्वारा इस क्षेत्र में पेश किए गए थे ताकि पहाड़ियों का हिंसक विरोध हो। संथालों और पहाड़ियों का पारंपरिक धार्मिक संबंध है। इन दोनों समूहों की आक्रामकता को नियंत्रित करने के लिए बड़ी संख्या में पूर्व–सैनिक इस क्षेत्र में बस गए थे। यह क्षेत्र तीन समुदायों के बीच अवि वास के साथ सांस्कृतिक रूप से अधिभारित रहा है। मैदान के लोग लंबे समय से इस क्षेत्र में घुसे हुए है। उन्हे संथालों द्वारा नापसंद किया जाता है जो उन्हे भोशक और संकटमोचक के रूप में देखते है। पहाड़िया संथालों के साथ अपने झगड़े में समर्थन के लिए मैदानों पर भरोसा करते है, हालांकि यह उन्हे मैदानों द्वारा भोशण से नही छोड़ता है।

संथाल अपेक्षाकृत एक प्रगति ील जनजाति है और यह खेती की जाती है। वे करीबी बुनना समुदायों में रहते है और पारंपरिक नेतृत्व पेटर्न को बनाए रखते है। संथालो का एक वर्ग इसाई बन गया है और अपेक्षाकृत जीवन का आधुनिक तरीका अपनाया है। आधुनिक राजनीतिक प्रणाली की भुरूआत के साथ गैर–पारंपिक नेतृत्व पेटर्न भी उभरा है। संथाल परिश्रमी लोग है और पि चम बंगाल और यहा तक कि असम तक भी ऑफ सीजन में प्रवास करते है। यद्यपि वे बसे हुए का तकार है, लेकिन उनकी खेती की प्रथाओं में समय के साथ सुधार नही हुआ है और इस क्षेत्र में आधुनिक कृशि प्रौद्योगिकी का ध्यान देने योग्य प्रभाव नही है। संथालों का माध्यमिक व्यवसाय वन उत्पादों का जमावड़ा है।

हालांकि संथाल समाज पितृसत्तात्मक है, लेकिन महिलाएं सामाजिक ताने–बाने के लिए बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हालाकि वह एक अलग स्थान रखती है, लेकिन उसे सीमा भुल्क और परंपराओं के अनुसार दायित्व के साथ सही कहा जाता है। संथाल का धर्म पुरूशों का धर्म है। पूर्वजों और परिवार के देवदाओं के घर में चढ़ाए जाने के अलावा महिलाओं का यज्ञ में उपस्थित होने की अनुमति नही है। अभी संथाल महिलाओं की नागरिक स्थिति में भी आधुनिकता के प्रभाव के साथ बदलाव आ रहा है। संथाल महिलाँए विज्ञान, शिक्षा, कला और संस्कृति के क्षेत्र में अपनी नई पहचान प्राप्त कर रही है। संथाल महिलाओं के बीच खेल और खेल की भावना पूरी तरह से देखी जा सकती है।

एक समुदाय के रूप में पहाड़िया एक खोल में चले गए है। वे संथालों और अंग्रेजों के साथ अपने संघर्श में अतीत में भारी हार गए और सदमें से उबर नही पाए। वे मुख्य रूप से संथालों और मैदानों से देर पहाड़ियों पर रहते है और प्रशासन के लिए दुर्गम है। इनका एक भाग तलहटी पर रहता है और सूरिया पहाड़िया के नाम से जाना जाता है। उन्हे उच्च लैंडर, हिलमैन या पहाड़ी जाति भी कहा जाता है। पहले के पत्राचार में उन्हे मुक्त बूटर्स और ᒥ ᒧ भारोत्तोलक के रूप में भी जाना जाता है। प्रामाणिक स्रोतों से पहाड़ियों के बारे में बहुत कम जानकारी है। संथालों जैसा कोई व्यापक अध्ययन उन पर नही किया गया है। पहाड़ी पहाड़िया बड़े पैमानो पर खेती के तरीकों का स्लशै और बर्न

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 4, Issue 10 Oct. 2022, pp: 972-977 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

करते है और मामूली वन उत्पादों को इकट्ठा करके अपनी आय को पूरा करते है। सौरिया पहाड़िया ने बसाया खेती और सरकार में मामूली रोजगार ले रहे है। कार्यालयों प्राथमिक शिक्षा का प्रसार पहाड़िया समूहों के बीच अच्छा है, लेकिन उन्होने उच्च स्तर की शिक्षा में बहुत प्रगति नही की है।

पहाड़िया गाँवों में अपने कुरूप रूप में गरीबी देखी जा सकती है। मल पोशण और बीमारियों ने पूरे गाँव को जर्जर अवस्था में पहुँचा दिया है। व्यापारियों और धन उधारदाताओं के पास उनके जुआ स्वभाव के कारण पहाड़ियो के साथ एक मीरा समय होता है। विवाह समाज की प्रमुख संस्था है। संथाल और पहाड़ियों के बीच विवाह प्रणाली प्रथागत व्यवहार द्वारा निर्देशित है। आदिवासी समाज सभी प्रकार के विवाहों का आदी है जैसे एकाधिकार, बड़ाई, बहुपली, विधवा पुनर्विवाह आदि।

आहार प्रणाली और भोजन की आदतें सादे पुरूशों से पूरी तरह से अलग है। भोजन को मुख्य वर्गो में विभाजित किया जा सकता है। (i) उस तरह से तैयार अनाज जो किसी तरह के करी के साथ जोड़ा जाता है। (ii) अन्य भोजन कच्चा या भुना हुआ लेकिन बिना अनाज के खाया जाता है। वेअपने खाद्य पदार्थो में सब्जियों की किस्मों, और पौधों की पत्तियों को भाामिल करते है। वे सभी प्रकार के पक्षियों, जानवरो, सरीसृपों को मछली के रूप में लेते है। वस्तुतः आदिवासी सर्वाहारी है। सफाहोर संप्रदाय को छोड़कर जो सख्त भाकाहारी है। यह जिला एक बहुभाशविद है, क्योकि आदिवासी लोग आर्य भाशाओं के बोलने वालों के साथ कम या ज्यादा रहते है और कुछ हिस्सों में विभिन्न समुदायों द्वारा चार भाशाएं बोली जाती है। संथाली, हिन्दुस्तानी, बंगाली और माल्टो मुख्य भाशाएँ है।

संथाली मुंडा परिवार से संबंधित भाशा है और उल्लेखनीय रू‍ से समान है जो केवल आर्य भाशओं से थोड़ा प्रभावित हुई है । यह प्रभाव केवल भाब्दावली तक ही सीमित है और मोटे तौर पर भाशा के सामान्य चरित्र की सरंचनाओं को बोल रहा है जो अपरिवर्तित रहे है। संथाली के पास कोई लिखित साहित्य नही है, हालांकि पारंपरिक किवदंतियां लोगों के बीच मौजुद है। रोमन भाशा की लिपि है, हालांकि कुछ हद तक देवनागरी लिपि को भी अपनाया गया है। इसका व्याकारण विकासशील अवस्था में है। लेकिन माचपेल्स के अनुसार संथाली सभी प्राकृतिक वस्तुओं के मामले में बहुत समृद्ध है। माल्टो पहाड़ियों की भाशाएँ है जिन्हे गुटो में भी विभाजित किया गया है।

सोरिया पहाड़िया और मल पहाड़िया अपनी जबान ओर स्वर मे कुछ बदलाव के साथ इन भाशाओं का इस्तेमाल करते है। यह एक द्रविड़ भाशा है जो ओरों क्षरा बोली जाने वाली कुरूख भाशा के साथ घनिश्ठ रू‍ से मिलती है। हालांकि यह आर्यन या संथाल दोनों से प्रभावित है। इसमें स्वयं का साहित्य और व्याकरण नही है।

बिहार यू.पी. और बंगाल से पलायन करने वाले प्लेनमैन हिंदुस्तानी और बंगाली भाशा का उपयोग करते है, मैथिली और बंगालिया मगही से प्रभावित स्थानीय बोली है । परिणाम अच्छी तरह से चिन्हित है जिसे छिका – छिका कहा जाता है।

जिला का मुख्य रूप चरित्र में कृशि है। लोगों का मुख्य व्यवसाय खेती है। जिले के स्वदेशी लोग या तो खेतिहर

मजदूर या किसान के रूप में काम कर रहे है। खरिफ और रबी मुख्य कृशि मौसम है। खेती योग्य क्षेत्र 75505 हेक्टेयर है, जबकि 16117.08 हेक्टेयर भूमि का अनुसरण है। प्रति व्यक्ति खेती योग्य भूमि की होल्डिंग 01.446 हेक्टेयर है। मिट्टी लाल, गतिहीन और धान की फसलों और कुल्थी, अरहर और बारबत्ती जैसी रबी फसलों के लिए उपयुक्त है। यह मक्का, गेहूं, चना, मसूर, सरसों, रेपसीट और सब्जियों के लिए भी उपयुक्त है। जूट, गन्ना, प्याज और आलू जैसी व्यावसायिक फसलें भी यहाँ उगाई जाती है। आम, पपीता, अमरूद और कटहल जैसे फलों के उत्पादन के लिए भी बागों का रखरखाव किया जाता है।

क्षेत्र में आय का एक मोटा अनुमान प्रदान करने के लिए एक प्रारंभिक प्रयास किया गया है। धान, पिटाई, पत्तल बनाना, बाँस की टोकरी बनाना उनकी व्यापारिक गतिविधियों के स्रेत है। प्रमुख उद्योगो और रोजगार के अवसरों के आभाव में आर्थिक विकल्प कृशि तक सीमित है। स्टोन चिप्स, राइस मिलिंग, वन उत्पाद जैसे महुआ, सबाई घास, तासीर, बांस की सेटिंग उनकी व्यावसायिक गतिविधियों का स्रोत है। बरबट्टी पहाड़िया जनजाति के लिए भी आय का अच्छा स्रोत है। हालांकि हाल के समय में मुर्गी पालन, सुअर पालन, प ुपालन क्षेत्र में आय का एक मोटा अनुमान प्रदान करने के लिए एक प्रारंभिक प्रयास किया गया है। धान पिटाई, पत्तल बनाना, बाँस की टोकरी बनाना उनकी व्यापारिक गतिविधियों से स्रोत है। प्रमुख उद्योगो और रोजगार के अवसरों के आभाव में आर्थिक विकल्प कृशि तक सीमित है। स्टोन चिप्स, राइस मिलिंग, वन उत्पाद जैसे महुआ, सबाई घास, तासीर, बांस की सेटिंग उनकी व्यावसायिक गतिविधियों का स्रोत है। बरबट्टी पहाड़िया जनजाति के लिए भी आय का अच्छा स्रोत है। हालांकि हाल के समय में मुर्गी पालन, सुअर पालन, प ुपालन और मछली पालन व्यावसायिक अवसरों की तरह बढ़ा है लेकिन इसे तैयार करने के लिए कोई वेज्ञानिक सरंचना नही है। यहां तक कि निजी उद्यमियों को भी इस क्षेत्र में नई चीजों के प्रयोग के लिए दिलचस्पी नही है। पाकुड़ जिले में विभिन्न आदिवासियों दलितों, मुस्लिमों हिंदी और बंगाली भाशी लोगो की मिश्रित विशम समाज की एक तस्वीर पे ा की जा रही है, जिसमें विभिन्न भाशाएँ संस्कृतिया और विधियाँ है। इस क्षेत्र के संस्थापक पिताओं में वि ोश रूप से आदिवासी वर्गो के बहुत से लोगो की भलाई के लिए इलाके में कृशि कार्यो और छोटे उद्योगों को विकसित करने का एक दृश्टिकोण था और यह आत्मनिरीक्षण का समय है कि क्या पोशित वस्तुओं को एक चूक के बाद हासिल किया गया है समय। पिछड़ेपन का मुख्य कारण स्पश्ट है । समाज को राश्ट्रीय जीवन की मुख्याधारा में लाने के लिए विभिन्न योजनाओं को लागू करके फलदायी प्रयास किए जा रहे है।

पाकुड़ जिले का इतिहास

मध्ययुगीन काल से पहले इस क्षेत्र का प्रामाणिक इतिहास बहुत कम ज्ञात है। इसके उद्भव और स्थापना में पाकुड़ राजमहल पहाड़ियों की श्रेणी के तहत गहरे जंगल और कठोर चट्टानों से घिरा तालाबों और बागों का एक समूह था। यह पहले ब्रिटि ा भाासन के तहत अपने नए आयाम में राज था। ब्रिटि ा क्रांतिकारी गतिविधियों का केंद्र भी रहे है।, जो 1855 के संथाल हॉल में देखे जा सकते है। इस क्षेत्र के प्रमाण बहुत पहले से ही बसे हुए हैं। उनके क्षेत्र के भारूआती निवासियों में , जिनका कोई रिकॉर्ड है, वे मालेर (सौरिया पहाड़िया) है जो अभी भी राजमहल पहाड़ियों और इसके आस–पास के पहाड़ी इलाकों के कुछ क्षेत्रों में निवास करते हैं। उनकी पहचान चंद्रगुप्त मौर्य के ''मल्ली'' काल से की गई है। उनके अनुसार मल्ली दे ा में मगध के लोगों और निचले बंगाल के लोगों के बीच एक दौड़ थी । चीनी तीर्थयात्री हियुएन त्सियांग के यात्रा खाते में एक संदर्भ भी पाया गया है, जिन्होने लगभग 645 ईस्वी में भारत का दौरा किया था। उनकी यात्रा के रिकॉर्ड से यह पता चला है कि उनेंने चम्पा राज्य का दौरा किया था, जिसकी उत्तरी सीमा लखीसरी से राजमहल पहाड़ियों तक फैली हुई थी, जबकि दिक्षिणी सीमी रेगिस्तानी पत्थरों से होकर गुजरती थी, जिसमें जंगली हाथी और झुंड थे जो झुंडो में घूमते थें।चम्पा के पूर्व में केई – चिंग किलो का साम्राज्य था, जो कि जनरल कनिघम के अनुसार वर्तमान संथाल परगना में भाामिल दे ा का पथ था।

12 वीं भाताब्दी में मोहम्मडन नियमो के आगमन तक उत्तर भारत के राजा हर्शवर्धन के पतन के बाद, यह क्षेत्र अपने गहरे जंगलों और दुर्गम दरों के कारण गुमनामी में रहा। क्षेत्र के प्रामाणिक इतिहास को मोहम्मदियों के भाासन के साथ भारू करने के लिए कहा जा सकता है जब उनकी सेनाएं तेलीगढ़ी दरें से होकर बंगाल तक जाती थी। मोहम्मदेन इतिहासकारों के अनुसार तेलियागढ़ी पास ''बंगाल की कुंजी'' कहा जाता है, क्योकि यह कई लड़ाइयों का ह य था। इस क्षेत्र के इतिहास में अगली

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 4, Issue 10 Oct. 2022, pp: 972-977 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

महत्वपूर्ण घटना 1592 में मुगल विजय के महत्व को जानने के लिए राजमहल की स्थापना बंगाल की राजधानी के रूप में हुई। मुगल सरकार। इन बंजर पहाड़ियों से राजस्व की कम संभावनाओं को देखते हुए, मंसबरों को उन पर नियंत्रण छोड़ने के लिए सामग्री दी गई थी जिनमें से प्रमुख मनिहारी के खतौरी परिवार थे। परिवार के संस्थापक ने बंगाल पर आक्रमण में मुगल सम्राट अकबर के प्रतिष्ठित जनरल राजा मान सिंह की मदद की। इनाम में उन्हे पथ राजमहल के मनसब जागीर और काहलगाँव को पहाड़ियों के पूर्व में पाकुड़ का कार्यालय मिला और उनके प ि चम चेहरे पर गोड्डा। चाहे वे जिस नियंत्रण में थे, वह प्रभावी था या, जैसा कि अधिक संभावना है, केवल नाममात्र था, वे 18वी भाताब्दी के मध्य तक मालेर के साथ अच्छे पदों पर थे जब मालर पूरी तरह से हाथ से निकल गया।

इस क्षेंत्र में अंबर और सुल्तानबाद के रू में जाने जाने वाले दो छोटे सम्पदा मौजूद थे जो बाद में पाकुड़ राज और महे ापुर राज के नाम से प्रसिद्ध हुए। मुगल/प्र ाासन से जुड़े ये दोनों जमींदार पहाड़िया डोमेन की देखभाल और पोशण के लिए जिम्मेदार थें। अ ांत पानी में मछली पकड़ रहे थे। 1757 ई में प्लासी की लड़ाई और 1765 में जंगल टेरी के साथ बंगाल के दिवानी के स्थानांतरण के बाद, विजयी अंग्रेजी ने बंगाल के बीरभूम जिले के माध्यमन से इन क्षेत्रों को नियंत्रित करने के लिए अपना प्र ाासनिक नेटवर्क विकसित किया। कैप्टन ब्राउन पहले ब्रिटि ा अधिकारी थे जिन्होने इस क्षेत्र के असली निवासियों पहाड़ियों पर जीत हासिल करने की योजना तैयार की। हालांकि इस क्षेत्र की हमे ा एक अलग पहचान है लेकिन रणनीतिक रूप से इसे बीरभूम जिले द्वारा नियंत्रित किया गया था। इस क्षेत्र में संथालों के आगमन से पहले बोडिंग एक बहुत ही आदिम जनजाति सौरिया पहाड़िया और माल पहाड़िया पहले से ही राजमहल पहाड़ियों के पहाड़ी इलाको में रह रहे थे। जो कुछ भी उनकी उत्पत्ति और जहां से भी वे आ सकते है, यह एक तथ्य है कि जंगली पहाड़ियों ने हमे ा अपनी भौगोलिक अलगाव के कारण अंग्रेजों के आने से पहले अपनी स्वतंत्रता बनाए रखी थी । राजमहल पहाड़ियो के निवासी मुगल सरकार के अधीन कभी नही थें। यह माना जाता है कि मुगल प्र ाासन इस क्षेत्र में घुसने में विफल रहा क्योंकि यह गहरे जंगल से ढका हुआ वि ाल पहाड़ी मार्ग है और वहां तक यह पहाड़ी तालाब पूरी तरह से कटा हुआ और बाहरी दुनिया से अलग–थलग रह सकता है। वे कभी भी किसी भी तरह से ब्रिटि ा सरकार के अधीनस्थ नही थे। 1774 में कैप्टन ब्राउन के आने तक।

कई सालों तक संथाल और पहाड़िया लगातार झगड़े में रहे थे। जनजातियों के बीच समझौता करने के लिए श्री सदरलैंड, 1819 में भागलपुर के संयुक्त मजिस्ट्रेट ने सरकार को एक सिफारि ा की। 1832–33 में दामिन –ए – कोह से । Damin –i-koh नाम एक फारसी है जिसका अर्थ है 'पहाड़ियों की स्कर्ट' । दामिन–ए–कोह का पहाड़ी मारग पहाड़ियों के लिए वस्तुतः आरक्षित था, जहां पहाड़ियों के निचले हिस्से में कुछ भूमि मील की दुरी पर बीरभूम जिले से बड़ी संख्या में संथालों को दी गई थी। 1818 में इस क्षेत्र में अपने दोरे के दौरान श्री सदरलैंड ने सुझाव दिया कि आदिवासी द्वारा बसाए गए पहाड़ी इलाको को सरकार की प्रत्यक्ष संपत्ति घोशित किया जाना चाहिए । ताकि उनकी देखभाल बेहतर तरीके से की जा सके। सरकार इन सिफारि ाो को 1823 और 1837 में स्वीकार कर लिया गयज्ञ श्री पोंटेट को राजस्व प्र ाासन कीा प्रभारी रखा गया। संथालों को जंगल साफ करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। ब्रिटि ा अधिकारियों को यह आभास हो गया कि सभी भ्रामक है। प्र ाासनिक प्रणाली की आंतरिक स्थापना आम आदमी के लिए उचित न्याय सुनि ि चत नही कर सकती थी और सरल दिमाग वाले संथालों के बीच गहरा अंतनिहित असंतोंश था। इसके अतिरिक्त बनिया और महाजन निर्दोश संथालों से भारी तादाद में काम करते थे आर उन पर कोई जाँच नही थी। दामिन क्षेत्र में जहाँ संथाल बड़ी संख्या में अंग्रेजी डीडीटी के नायब सजावल सहायक थे। बहुत अत्याचारी थे। पुलिस समान रूप से भ्रश्ट थी। संथाल को किसी भी कीमत पर न्याय के लिए तैयार करने के लिए इस्तेमाल किया गया था। एक और अधिक घृणित कदाचार कामनन्ती व्यवस्था थी । इसके पीछे का विचार भाारीरिक श्रम द्वारा एक ऋण का पुनर्भुगतान था। हालांकि व्यवहार में देनदारों ने कई मामलों में पीढ़ियों या दो और फिर भी ऋण के लिए काम किया, चाहे कितना भी छोटा क्यों न हो, उसे चुकाया नही जा सकता था। इन सभी तथ्यों और परिस्थितियों ने 1855 के संथाल हूल का नेतृत्व किया। इस तबाही का मूल कारण स्थायी बंदोबस्त के परिणामस्वरू संथाल का आर्थिक निजीकरण था।

विद्रोह की पहली बिजय मांझी के नेतृत्व में लिट्टीपारा में प्रज्वलित की गई थी। बिना मुकदमें के भागलपुर जेल में बिजय मांझी की मौत और उनकी मौत ने संथालों की भावनाओं को भड़का दिया। उनके पुत्रों चंडी और सिंघराई ने विद्रोह का बैनर उठाया। चंदारिया को मुठभेड़ में मार दिया गया था और सिंघराइ को एक मुकदमें की सुनवाई के बाद बरहेट में गिरफतार कर लिया गया था। सिदधु, कान्हू चांद ओर भैरब के नेतृत्व के इकट्ठे हुए दस हजार संथालों ने मुख्य रूप से ब्रिटि ा अधिकारियों को चुनौती देकर पाकुड़ और महे ापुर को बर्खास्त कर दिया।

लेकिन ब्रिटि ा सरकार। निर्मम हाथों से विद्रोह को दबाने में सफल रहे। पांरपरिक हथियारों से लैस संथाल बीमार सुसज्जित ब्रिटि ा सेना का सामना नही कर सकते थें। हालांकि संथालों को पीटा गया था लेकिन विद्रोह के दौरान उनके द्वारा दिखाए गए असाधारण साहस और संकल्प ने ब्रिटि ा भाासको पर अपनी छाप छोड़ी। उन्होने महसूस किया कि संथालों को अच्छे हास्य में रखा जाना था और उनकी उचित मांगों को सरकार ने पूरा किया। इस क्षेत्र पर कभी भाासन करना चाहता था। 1855 के अधिनियम XXXVII द्वारा एक अलग जिला बनाया गया था और इसे संथाल परगना का नाम दिया गया था, भाायद संथालों को खु ा करने के लिए। संथालों की ि ाकायतों के निवारण और सुरक्षा की भावना के साथ उन्हे एक मातृभूमि देने के लिए कदम उठाए गए। बाद में इस क्षेत्र की सुरक्षा और वि ोश पहचान के लिए संथाल परगना टेनेंसी एक्ट 1949 को स्वतंत्रता के बाद लागू किया गया था।

पाकुड़, संथाल परगना का एक हिस्सा और पार्सल दे ाभक्ति के पक्ष से प्रतिरक्षा नही करता था और आजादी के लिए दे ा के संघर्श में अपनी भूमिका निभाई थी। मार्टेलो टॉवर अब पाकुड़ भाहर में अंग्रेजों और संथालों के बीच लड़े गए संघर्श के अव ोश है । यह सन 1856 में सर मार्टिन, तत्कालिन S.D.O पाकुड़ द्वारा संथालों के हमले से ब्रिटि ा राज की रक्षा के लिए बनाया गया था। यह डीसी के आवास के सामने स्थित सिद्धु कान्हु पार्क के दक्षिण पूर्व में स्थित है। प ि चम की और निकटवर्ती पहाड़ियो ओर उत्तर पूर्व की और राजमहल की पहाड़ियों और जंगीपुरू के बारे में 24 किमी। पूर्व में मार्टेलो टॉवर के ऊपर से दिखाई देता था, रणनीतिक रू से यह टॉवर ब्रिटि ा सेना के लिए संथालों के विद्रोह को देखने और जांचने के लिए बहुत धिक महत्वपूर्ण था, एक बार संथालों ने धनुश और तीर और युद्ध कुल्हाड़ियों के साथ आठ हजार स ास्त्र रूप से संख्या में हमला किया और लूटपाट करके पाकुड़ को नश्ट कर दिया। रानी के महल के बंले और बर्खास्त करना। प्रति ाोध में, ब्रिटि ा सेना ने हजारों लोगों की सदर, देवघर, जामताड़ा, गोड्डा और साहिबगंज में विभाजित किया गया था। पाकुड़ को साहिबगंज के साथ उप–मंडल के रूप में जोड़ा जा रहा था, जिसे वर्श 1994 में जिले के रूप में अपग्रेड किया गया था। जनसंख्या के सामान्य पहलुः किसी भी भौगोलिक अध्ययन में जनसंख्या की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यह एक संदर्भ बिंदु है जिसमें से अन्य सभी तत्व देखे जाते है और जिससे वे सभी, अकेले या सामूहिक रूप से महत्व और अर्थ प्राप्त करते है। मनुश्य सभी प्राकृतिक और मानव निर्मित संसाधनों का उत्पादक और उपभोक्ता है और उनका उपयोग क्षमता और क्षमता के साथ करता है। मनुश्य का यही गुण उसे सबसे बड़ा संसाधन बनाता है। इसलिए, किसी क्षेत्र की आबादी का अध्ययन आव यक

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 4, Issue 10 Oct. 2022, pp: 972-977 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

है क्योकि इसका संबधित क्षेत्र क`जल संसाधन के उपयोग पर सीधा असर पड़ता है। क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था और जल संसाधन के साथ इसके संबधों को आकार देने में जनसंख्या कीा सर्वोच्च भूमिका को धन में रखते हुए एक अनुपात – लोकिक ढांचे में विभिन्न जनसांख्यिकीय वि ोशताओं का अध्ययन करना उचित है।

ज्ञान और प्रौद्योगिकी के साथ इसकी गति ीलता के संदर्भ में गुणात्मक और मात्रात्मक मूल्यो के कारण जनसंख्या सबसे मूल्यवान संसाधन है। जनसंख्या हमे ा अपने सामाजिक – आर्थिक– सांस्कृतिक वातावरण को बदलने और अपने गति ील गुणों और प्राकृतिक संसाधनो के आधार पर अपने पर्यावरण– राज्य को प्रभावित करने के लिए एक महत्वपुर्ण भूमिका निभाती है। जनसंख्या और उसके सांस्कृतिक वातावरण के बीच पारस्पारिक क्रिया की तीव्रता जनसंख्या संसाधनो के गुणात्मक और मात्रात्मक मूल्यों पर निर्भर करती है। संस्कृतिकों का परिवर्तन इस अंतःक्रिया के कारण होता है। इसलिए, संसाधन प्रबंधन अध्ययनों में जनसंख्या के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन आव यक है। संख्या में हत्या करके उन्हें बेरहमी से कुचल दिया। इन झड़पों में संथालो को भारी नुकसान हुआ क्योंकि वे अपने पारंपारिक हथियारों के साथ अच्छी तरह से सुसज्जित ब्रिटि ा सेनाओं के सामने खड़े नहीं हो सकते थे। इस मा ल मार्टले टॉवर ने संथाल योद्धाओं के बलिदानों को देखा है, जिन्होंने अंग्रजों के खिलाफ युद्ध छेड़ रखा था, ज़मींदार और दुर्बल धन उधारदाताओं के साथ युद्ध इस घर की भूमि से उन्हें बाहर निकालने का ह य। उनके बलिदानों का दे ा की स्वतंत्रता में जीवंत योगदान है।

व्यापक परिप्रेक्ष्य से देखे जाने पर जिले में जनसांख्यिकी गति ीलता का स्थायी विकास पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। पिछले द ाक में जनसंख्या वृद्धि लगभग 28.33% पर चिह्नित की गई है, जिसका अर्थ है कि इसके लिए अधिक बुनियादी ढाँचे का समर्थन, अधिक स्वास्थ्य सेवाओ और उसी के लिए अधिक संसाधनों की आव यकता है। भाहरीकरण, प्रवासन और विकास के क्षेत्र में और कुछ महत्वपूर्ण चरों पर उनके अंतरसंबधों पर प्रभाव डालने वाले कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर भी इसका प्रभाव पड़ेगा।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

Census of India (2001) Primary Census Abstract.

District Statistical Handbook Pakur 2016
District Statistical Handbook Pakur 2018

निरंजना, फलगू, पट्टनायक विश्वजीत (2005).इन्फ्लूएन्स ऑफ लर्नड ऑप्टिमिज्म एण्ड ऑर्गेनाइजेशनल इथोस ऑन ऑर्गेनाइजेशन सिटिजनशिप विहेवियर : एस्टडी ऑन इण्डियन कॉर्पोरेशन्स. इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमन रिसोर्सेज डवलपमेन्ट एण्ड मैनेजमेन्ट, 5 (1), 85–98,

निगार्ड ओलव (2017).अरली ट्रेकिंग एण्ड इमिगरेन्ट ऑप्टीमिज़्मः ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ एजूकेशनल एसपिरेशन्स अमंग स्टूडेन्ट्स इन डिसएडवान्टेज्ड स्कूल्स इन स्वीडन एण्ड द नीदरलेण्ड.कम्पेरेटिव माइग्रेशन स्टडीजजर्नल, 20(5)

.निक्पोउर, फर्सानि, ताजबख्श एवं कियैई (2011).द रिलेशनशिप बिटविन ईरानियन एलीमेन्टरी टीचर्स इमोशनल इन्टेलीजेन्स एण्ड देयर सेल्फ– एफिकेसी.इन्टरनेशनल कॉन्फरेन्स ऑन लैंगूयेज, लिटरेचर एण्ड लिंगूईस्टिक

नेलकेसी (2012).द रिलेशनशिप बिटविन द इन्डिविजुअल वैल्यूज एण्ड क्रिटिकल थिंकिंग स्किल्स ऑफ सोशिअल साइंस टीचर्स. इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ प्रोग्रेसिव एजूकेशन,8 (1), पृष्ठ 22–34.
अमित एवं मिस रिचा सरोज (2010).माध्यमिक शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का शिक्षक प्रभावकारिता तथा व्यावसायिक तनाव का अध्ययन.जर्नल ऑफ हिस्टरी एण्ड सोशियल साइन्सेज.1(1), ISSN–229–579.

Adeyemo. D. A. (2007) Moderating Influence of Emotional Intelligence on the link between Academic self efficacy and Achievement. Psychology and Developing Societies 19, 2 199-213.

Agarwal, K.C. Environmental Biology. Bikaner (India) : Agro botanical Publishers, 1987.pp, 439

बन्धना (2011).केन्द्रीय विद्यालय शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि एवं मूल्य.एजूट्रैक नीलकमल पबिलकेशन्स, हैदराबाद,वॉल्यूम–10, पृष्ठ 36–40

.बेकेट डेविड (2010).ऑप्टिमिज्म, एण्ड इमोशनल इन्टेलिजेन्स एज पोटेन्शिअल मॉडरेटर्स ऑफ वर्कप्लेस स्ट्रेस.शोध प्रबन्ध द यूनिवर्सिटि ऑफ विन्चेस्टर, इंग्लैण्ड।

बिर्यान (2011).इग्जामिनिंग द रिलेशनशिप बिटविन इमोशनल इन्टेलीजेन्स एण्ड टीचर सेल्फ–एफिकेसी अमंग एलीमेन्टरी टीचर्स. शोध प्रबन्धईस्टर्न मिचिगन यूनिवर्सिटि, यू.एस.ए

.

Bhave, W.V. (1967) : Development of education in Madhya Pradesh, Ph.D. Edu, Rani Durgavati University Jabalpur.

Biswal, Ashutosh (1995) : Development of Computer-based Timespace-personnel Management System. Ph.D., Edu. DeviAhilya Vishwavidhyalaya.

Bong-Adams (2006) – UNESCO'S Rol, Vision and challenges for the UN Decase of Education for sustainable Development (2005-14) Connect XXXI (1-2): 1-5.

Brog, W.D. and M.D. Gall (1978) : Educational Research : An Introduction, New York : McGraw Hill Book Company, pp. 798.

Buch, M.B. (1986). Third Survey of Research in Education. 19781983, New Delhi: NCERT.

Buch, M.B. (1991). Fourth Survey of Research in Education. 19831988, Volume-I, New Delhi: NCERT.